आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 30/06/2016 ● अंक - 571 ● तारीख - 01 जुलाई 2016, आषाढ कृष्ण - 12 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया ● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

तुम जो भी कर्म प्रेम और सेवा की भावना से करते हो, वह तुम्हे परमात्मा की ओर ले जाता है। जिस कर्म में घृणा छिपी होती है, वह परमात्मा से दूर ले जाता है।

श्री गणेश स्तुति

गाइये गणपति जगवंदन ।
शंकर सुवन भवानी के नंदन ।।

सिद्धी सदन गजबदन विनायक।
कृपा सिंधु सुंदर सब लायक ।।

मोदक प्रिय मृदु मंगल दाता ।
विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ।।

मांगत तुलसीदास कर जोरे।
बसहिं रामसिय मानस मोरे ।।

समर्थ वह है, जो दूसरों को समर्थ बनायें

महिमा मनुष्य शरीर की नहीं, विवेक की है। जड़ता से सम्बन्ध–विच्छेद के लिये विवेक काम आता है। आध्यात्मिक उन्नति में भाव, उद्देश्य काम आता है।

विवेक के द्वारा नाशवान् का त्याग करके अविनाशी को प्राप्त करना आपका काम है। इसमें भगवान् सहायता करते हैं।

यह नियम है कि जब किसी को भगवान् और सन्त पर में क्रोध आता है अथवा इनके प्रति दुर्भाव होता है, तब उसे भगवान् और सन्त में गुण दिखते ही नहीं, अवगुण–ही–अवगुण दिखते हैं। नारद जी को भगवान पर क्रोध आया तो वे बोले–'स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह, सदा कपट व्यवहार विवाह जैसे मांगलिक कार्य को भी लोभ और मान–बड़ाई की इच्छा ने बड़ा भ्रष्ट कर दिया है। वर पक्ष में दहेज का लोभ रहता है, और कन्या पक्ष वाले अपनी वाह वाही के लिये करोड़ों रूपये खर्च देते हैं।

धन के कारण अपने को ऊँचा मानते हैं– यह आपका बड़ा अपमान है, निन्दा है। आप हाथ की मैल से भी नीचे हो गये। आपकी इज्जत धन बढ़ने से नहीं है, प्रत्युत धर्म बढ़ने से है। भगवान् भी धर्म की रक्षा के लिये अवतार लेते हैं।

पहले हमारे समाज में पैसों वाले की इज्जत नहीं होती थी। पैसे राक्षसों के पास होते थे। पैसों वाला समर्थ नहीं है। समर्थ वह है, जो दूसरों को समर्थ बनाये। जो दूसरों को असमर्थ करें, वह समर्थ नहीं है, प्रत्युत राक्षस है, असुर है।

सुखोई जेट ने सुपरसोनिक ब्रह्मोस के साथ भरी उड़ान,

ऐसा करने वाला भारत पहला देश

इंडियन एयरफोर्स के सुखोई फाइटर जेट ने पहली बार ब्रह्मोस मिसाइल के साथ उड़ान भरी। इसके साथ ही भारत दुनिया का पहला देश बन गया है, जिसके एयरफोर्स बेड़े में अब सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल शामिल है। नासिक हवाई पट्टी से सुखोई Su–30 MKI ने शनिवार को कामयाब उड़ान भरी। ये टेस्ट फ्लाइट HAL की ओर से की

– एचएएल के चेयरमैन टी. स्वर्ण राजू ने शनिवार को बताया कि 45 मिनट तक सुखोई जेट मिसाइल के साथ आसमान में रहा।

– 2014 में हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (भ।स) को 2 सुखोई जेट में ब्रह्मोस मिसाइल लगाने का कॉन्ट्रैक्ट दिया गया था।

– इस टेस्ट के अगले फेज में ब्रह्मोस को फाइटर जेट से टेस्ट फायर किया जाएगा।

– एयरफोर्स के करीब 40 सुखोई विमानों में ब्रह्मोस मिसाइल लगाने की प्लानिंग है।

– ब्रह्मोस एयरोस्पेस लिमिटेड के सीईओ सुधीर कुमार ने कहा, दुनिया में ये पहला मौका है, जब सुपरसोनिक मिसाइल के साथ किसी फाइटर जेट ने उड़ान भरी है।

न्यूक्लियर हथियारों के साथ हमला करती है मिसाइल

– ब्रह्मोस मिसाइल 290 किलोमीटर तक दुश्मन के ठिकानों पर अटैक कर सकती है।

– ब्रह्मोस मिसाइल की स्पीड 2.8 मैक है, जो कि इसे दुनिया की तेज स्पीड वाली मिसाइल बनाती है।

– यह सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है, जो एटम बमों को भी अपने साथ ले जा सकती है।

– ब्रह्मोस मिसाइल जमीन और समुद्र से आसमान में दुश्मन पर अटैक कर सकती है।

– ब्रह्मोस मिसाइल अपने साथ 300 किलोग्राम तक विस्फोटक ले जा सकती है।

– इस मिसाइल का वजन 2500 किलोग्राम है।

– 2007 में ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम को इंडियन आर्मी के सैन्य बेड़े में शामिल किया गया था।

– इंडियन आर्मी के पास मौजूदा समय में ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम के तीन रेजिमेंट हैं।

भारत ने रूस की मदद से बनाए हैं सुखोई–ब्रह्मोस

– ब्रह्मोस मिसाइल DRDO और रूस ने मिलकर बनाई है।

– दूसरी ओर, एयरफोर्स के बेड़े में शामिल सुखोई जेट को रूसी कंपनी सुखोई और एचएएल ने बनाया है।

– ये इंडियन एयरफोर्स की मुख्य फाइटर जेट है।

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है।

उत्साह मानव जीवन के लिए वरदान है। यह एक अदृश्य शक्ति है, जिसे ईश्वर ने सभी को दी है। हम कोई भी कार्य करें, उसमें उत्साह होना अत्यंत आवश्यक है। उत्साहपूर्वक किया गया कोई भी कार्य सरलता के साथ समाप्त हो जाता है। उसी कार्य को यदि हम बेमन या अरुचि से करते हैं तो उसे सफल होने में दीर्घकाल लगता है। प्रत्येक कार्य उत्साहपूर्वक कीजिए, फिर देखिए कि कठिनतम् कार्य भी सरल नजर आने लगेगा।

उत्साह से मन ऊर्जा को प्राप्त करता है, उससे शक्ति प्राप्त होती है, जिससे शरीर को परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है। वास्तव में तो कार्य का छोटा या बड़ा दिखाई देना हमारे मनोभावों पर निर्भर करता है। कभी छोटे कार्य बड़े और बड़े कार्य छोटे दिखाई देते हैं। इसलिए किसी कार्य या परिस्थितियों को देखकर निरुत्साहित नहीं होना चाहिए। अपितु इस प्रकार का मनोभाव अपने अंदर उत्पन्न करना चाहिए कि अमुक कार्य तो बहुत सरल है अथवा अमुक परिस्थिति से पार पाना बहुत आसान है।

आप अपने अन्तर्मन में झांकिए। आपके अन्दर कार्यक्षमताओं की असीमित शक्ति है, जिसको बाहर निकालने की परम आवश्यकता है। इन्हीं शक्तियों का उपयोग कर अपने कार्य को सफल बना सकते हैं। निराशा, कुंठा, आलस्य और उत्साहहीनता से कोसों दूर रहें, ये आपकी शक्तियों को क्षीण करते हैं। आपकी असफलता में 100 प्रतिशत भूमिका इन्हीं की रहती हैं।

उत्साह आपको विजयश्री प्रदान करता है, सफलता प्राप्त करवाता है। कठिनाइयों से पार पाने में आपकी मदद करता है। हम कह सकते हैं कि 'उत्साह' सफलता का सिद्ध मंत्र है। जब तक आप इस उत्साह रूपी सिद्धमंत्र का प्रयोग नहीं करेंगे, सफलता की सीढ़ी नहीं चढ़ पाएंगे। आप उत्साह के महत्व को समझिए और सफलता की सीढ़ी–दर सीढ़ी चढ़ते जाइए।

– संसार का सबसे बड़ा दिवालिया वह है, जिसने उत्साह खो दिया – श्रीराम शर्मा आचार्य

– बाधाएं व्यक्ति की परीक्षा होती है। उनसे उत्साह बढ़ना चाहिये। – यशपाल

– हताश न होना सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह मनुष्य को कर्मों में प्रेरित करता है, और उत्साह ही कर्म को सफल बनाता है। – वाल्मीकि

– विश्व इतिहास में प्रत्येक महान और महत्त्वपूर्ण आन्दोलन उत्साह द्वारा ही सफल हो पाया है। – एमर्सन

– उत्साह मनुष्य की भाग्यशीलता का पैमाना है – तिरुवल्लुवर

टैल्कम पाउडर के प्रयोग में रखें सावधानी

चेहरे की सुंदरता बढ़ाने के लिए और सांवलापन दूर करने हेतु आज तक टैल्कम पाउडर का सर्वाधिक प्रयोग होता आ रहा है। बाजार में जैसे–जैसे नवीनतम सौंदर्य प्रसाधन उपलब्ध होते जा रहे हैं, वैसे–वैसे टैल्कम पाउडर का उपयोग बढ़ने लगा है। शायद ही कोई ऐसा घर होगा जहां टैल्कम पाउडर का डिब्बा न मिले। यह इसकी व्यापक उपयोगिता प्रकट करता है।

वास्तविकता

बहुत से लोग चेहरे के अलावा नहाने के बाद टैल्कम पाउडर का डिब्बा उठाकर सीधे छाती और पीठ पर छिड़ककर लगाते हैं। इस दौरान पाउडर डस्ट के सूक्ष्म कण सांस के जरिए फेफड़ों में पहुंच जाते हैं और एलर्जिक रिएक्शन पैदा कर सकते हैं। जब लंबे समय तक नियमित पाउडर छिड़कने का सिलसिला चलता रहता है, तो इससे फेफड़ों को भारी नुकसान होने का खतरा बढ़ जाता है।

पाउडर लगाने में सावधानी रखें –

उन लोगों को टैल्कम पाउडर इस्तेमाल करते समय विशेष सावधानी रखनी चाहिए, जिन्हें धूम्रपान करने की आदत हो, दमे की शिकायत हो, पुरानी ब्रॉन्काइटिस से पीड़ित हों, या फिर फेफड़ों के अन्य रोग हों, क्योंकि असावधानीपूर्वक पाउडर के इस्तेमाल से ये तकलीफें बढ़ सकती हैं। इसके अलावा टैल्कम पाउडर के नियमित प्रयोग से त्वचा के रोम छिद्रों के बंद हो जाने के कारण पसीना व विजातीय तत्वों के शरीर से बाहर निकलने में बाधा पहुंचती है। परिणामस्वरूप त्वचा की विभिन्न बीमारियों के होने की संभावना बढ़ जाती है। शरीर की बदबू दूर करने के लिए आजकल डिओडोरेंट टेल्कम पाउडर भी मिलने लगे हैं तथा घमौरियों की तकलीफ मिटाने के लिए विभिन्न रसायनों से युक्त विशेष 'प्रिक्लीहीट पाउडर' का चलन भी काफी बढ़ गया है, जिनके दुष्प्रभाव से 'डर्मेटाइटिस' त्वचा रोग होने का खतरा रहता है। अतः यह मानना गलत है कि टैल्कम पाउडर लगाने से स्वास्थ्य को कोई नुकसान नहीं होता।

क्रांति–कथा

क्रान्ति–कर्म से करुणा की

क्रान्ति–है सद्कर्म की
कथा–है मानव धर्म की

एक बगले के किरायादारो ने पेमेंट नहीं किया क्यों इन्ही तनावों में जिन्दगी में रहकर के धर्म के महान उन लक्षणों को

सम्भवत भूल जाता है। एक बार की बात एक संत के पास एक धनवान थैली खोलकर उसे स्वीकार करने की प्रार्थना की संत ने उत्तर – दिया – अत्यन्त दरिद्र व निर्धन का धन मैं स्वीकार नहीं करता पर धनवान ने कहा में धनवान हूँ। – संत ने कहा – धन की कामना तुम्हें है या नहीं उसने उत्तर दिया – अवश्य है,

संत ने कहा – जिन्हें धन की कामना हैं उन्हें रात–दिन धन संचय की चिन्ता रहती है धन के लिये नाना प्रकार के अपकर्म करने पड़ते हैं उनके जैसा कोई दरिद्र नहीं – धनवान धन सहित वापस लौट गया। उसी प्रकार जो इन्सानियत का धर्म है जो कुदरत को धर्म है ऐसा वो सोच रहे थे अचानक ना मालूम कब झटका लगा बस के सारे यात्री कोई ऊपर से गिरा कोई इधर से बाएँ की तरफ गिरा किसी का घुटना टूटा किसी का हाथ फाटक में फंस गये और मगन लाल जी भी बेहोश हुए होश ही नहीं रहा कोमा में चले गये लाला, शरीर के कहीं स्तंभ है स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर कारण शरीर बाबू आप कहोगे महाराज, ये मोटी–मोटी बाता समझ में कोनी बैठे कारण शरीर कई वे न सूक्ष्म कई वे कही वात नीये आपने तो यो देख लेनो ये जो साढ़े तीन हाथ री काया दी है भैय्या इसका सदुपयोग कर ले इसको सन्तुलित रख ले स्वच्छ रख ले शुद्धि कर ले मैं बात कर रहा था मगन लाल जी की तो मगन लाल जी को आठ दिन बाद होश आया और चारो तरफ देखते है।

क्रमशः अगले अंक में...

मानव मन के बोल

मानव मात्र एक समान

गतांक से आगे...

आप दौड़े–दौड़े वापस गये, बाद में होश आया, बोध आया। अच्छा–अच्छा मालिन 2000 रूपये ले ले और देदे। अरे सेठ जी! पाँच मिनट पहले आपके पड़ोसी आये और वो 3000 रूपये में ले गये। अरे मालिन! तू भी ना समझ है, मूर्ख है क्या?अरे मालिन वो 1 लाख रूपये का हीरा था, 3000 में तुझे नहीं बेचना चाहिये था। बोले –भाई साहब, एक बात अच्छी तरह से समझ लो। मैंने तो 100 रूपये में आपसे खरीदा था, 3000 में बेचकर 2900 रूपये कमा लिये। लेकिन महाराज! आपको तो मालूम था ना कि एक लाख का हीरा था, तो 2000 रूपये में मेरे से क्यों नहीं खरीद लिया?आप तो 98 हजार रूपये से ठगा गये। मैं भोली, अशिक्षित, मेरे को तो कुछ समझ नहीं आयी, परन्तु आप तो पढ़े लिखे हो। तथाकथित बुद्धि जीवी मत बनियेगा। बुद्धि विलास मत रखिए, केवल बुद्धि विलास। गीता जी को बारहवाँ, अठारहवाँ, ग्यारहवाँ अध्याय याद है, च्छी बात है। आपको याद है तो ज्ञान भी प्राप्त हुआ, आपके व्यवहार में भी उतर गया। आपके माता–पिता जी को प्रणाम है, जिन्होंने आपको ऐसे संस्कार दिये कि आपने गीता के कई पाठों के श्लोकों को याद कर लिया। महारानी अहिल्या बाई ने एक श्लोक सुना था आचार्य जी से –

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

सुबह बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना..... .. और भी कई काम। उधर, दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की! जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है।

यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या को छोड़कर कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाइश न हो, उदाहणार्थ – निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा –"यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा – अथवा इतने घंटो की कार्य–हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।"

उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी – "आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत सुबह पाँच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरान्त भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाये तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं – धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

और हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का–संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तोलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हटकर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गयी है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें 'अतिरिक्त कार्य' लगता है। इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है।

आईए, हम अपनी सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप में मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

सेवा को स्वभाव बनाएं : मानव

उदयपुर। 'जहां प्रकृति और प्रेम के झरने का मिलन होता हो जाता है, वहीं प्रार्थना का उद्गम होता है।' यह बात नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ बड़ी में संस्थापक कैलाश मानव ने 'सामाजिक क्रांति कथा' के दूसरे दिन कही। उन्होंने कहा कि मनुष्य को कभी ऐसा बड़ा बनने का लोभ नहीं करना चाहिए कि सहजता, सरलता और प्रसन्नता को ही खो दे। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, उसे समाज से बहुत कुछ हासिल हुआ है, उसका दायित्य है कि वह भी अपने ज्ञान और संचित धन से समाज की बेहतरी के लिए काम करे और सेवा को स्वभाव बनाएं। समाज में आज बाल विवाह, कन्या भ्रुण हत्या, दहेज प्रताडना, दुष्कर्म और भ्रष्टाचार जैसी अनेक समस्याएं हैं। समाज को इनसे मुक्त कर हम उन आत्माओं को प्रसन्न करें, जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता और नवनिर्माण के लिए अपना बलिदान दिया।

व्यसनों से दूर रहे : प्रशांत

इसी दिन अपरान्ह हुई श्रीमद भागवत कथा में साध्वी प्राची देवी ने कहा कि 'गोकुल की गलियों में जब श्री कृष्ण का बांसुरी वादन गूंजायमान होता था तो समस्त जीव मोहित हो जाते थे, और बंसी की मधुरता सुनकर श्री कृष्ण की और खिंचे चले जाते थे।'

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने रोगी बंधुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि ये शरीर ईश्वर का बनाया मन्दिर है, अतः इसका पूजन करना चाहिए। विभिन्न व्यसनों के प्रयोग से इसे दूषित व नष्ट नहीं करना चाहिए। 'दिखा दे सांवरी सूरत तो तेरी मेहरबानी है।' भजन पर भक्त खूब झूमे। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण आस्था चैनल पर दोपहर 3 से सायं 6:30 बजे तक किया गया। संचालन ओमपाल सीलन ने किया।

मुस्कान मानवता की

(मानव धर्म शृंखला का षष्टम् (6) पुष्प)

हे भगवान! मैं आपका हूँ आप मेरे हैं, मुझे धर्म सिखाओ, मुझे ज्ञान सिखाओ, मुझे पृथ्वी जैसा धैर्य सिखाओ प्रभु, मुझे आकाश जैसी उदारता सिखाओ प्रभु, मैं सुख में उदार बनूँ। दुख में त्याग करूँ, मैं धर्म को जान पाऊँ। धर्म है मानवता, धर्म है करूणा, धर्म है मोहब्बत, धर्म है भूखे को भोजन कराना, प्रभु मुझे धर्म का ज्ञान आ जावे। मैं कुछ जानता नहीं ठाकुर।

गुरू वंदना तर्जः–छन्द

हे मेरे गुरूदेव करूणा, सिन्धु करूणा कीजिए।
हूँ अधम – आधिन अशरण, अब शरण में लीजिए।(25)

हूँ अधम, हे ! प्रभु मेरा घमण्ड तोड़ियेगा, हे ! प्रभु मेरी ईर्ष्या द्वेष को दूर कीजिएगा, हे ! प्रभु ये मोह समाप्त हो, हे ! प्रभु मैं सच्चे धर्म को समझ पाऊँ। हे प्रभु मैं इस गरीब की उदासी को दूर कर सकूँ। हे प्रभु, मैं समझ पाऊँ कि ये गरीबी–अमीरी दोनों बहनें हैं, मैं समझ पाऊँ कि ये गरीबी का बेटा भी मेरा भाई है, मैं समझ पाऊँ कि ये धन साथ में आएगा नहीं। आईये सरस्वती माता की जय–जयकार करेंगे – दोनों हाथों को ऊँचा करेंगे – बोलिये सरस्वती मात की जय।

महीम जी :– जी गुरूदेव आपने सच कहा ये धन साथ नहीं जाता।

दोहा

गुरूजी :– येन–केन विधि – दीने, दान करे कल्याण, धन्यवाद आपको।

परहित बस जिन्ह के मन माही,
तिंन्ह कहूं जग दुर्लभ कछु नाही।

परहित जो करते हैं, उनके लिए जग में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

दोहा कबीर वाणी

भाव हमारे अच्छे हैं, तो बरकत हमारी दासी है।
कर्म हमारे अच्छे हैं, तो घर में मथुरा काशी है।(26)

घर में मथुरा काशी, एक ट्रक के पीछे हमारे प्रेरणा सूत्र स्वर्गीय डॉ. आर.के. अग्रवाल साहब ने, डॉ रामकुमार जी गर्ग साहब ने पढ़ा और डायरी में लिख दिया। कर्म हमारे अच्छे, कर्मशील बनिये – कर्म प्रधान विश्व करी राखा, जो जस करहु सो तस फल चाखा।

कर्म शील बने रहिये, कर्महीन मत बनना, ये दान, करना कर्मवान है, ये दान करना सत्कर्म है। 'करे सदा सत्कर्म विहसते कर्मयोग अपनाना है। हँसते हुए सत्कर्म करें, हाँ महाराज! दान बहुत बड़ा धर्म है।

सुरेन्द्र साहब आप यहाँ पधारे, उसके लिए आपको बहुत – बहुत धन्यवाद। ये व्यवहार की कथा जैसे आप चण्डीगढ़ से पधारे अपना समय निकाला, बहुत बड़ा दान तो आपके पधारने से हुआ। क्योंकि तन, मन और धन तीनों का सद्पयोग करना सबसे बड़ा धर्म है। आप खुद पधारे, आपके चरणों की धूल से ये जगह पवित्र हुई, जैसे मन्दिर में जाते हैं और सीढ़ी पर जब चढ़ते हैं तो पहले दोनों हाथ लगाकर कभी–कभी माथा भी लगाते हैं कि इस सीढ़ी से होकर बहुत – बहुत अच्छे लोग दर्शन करने गये हैं, उनके गुणों के परमाणु यहाँ है उनके गुणों से में भी गुणवान बनूँ, मैं ज्ञानवान बनूँ, मैं दयावान बनूँ, करूणावान बनूँ, मैं बच्चों को प्यार दे सकूँ, मैं बुजुर्गों को सम्मान दे सकूँ, ऐसे गुण हमारे में आ जाते हैं, आईये आगे की कथा में प्रवेश करें –

मंत्र

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।(27)

पवित्र बनो, जब हम हल हाथ में लेते हैं, आपने देखा होगा, ये यज्ञ में बिराजते हैं, पहले आचार्य जी कहते हैं, आईये, पधारिये, आप अपवित्र से पवित्र होवें, ये बहुत बड़ा धर्म है। इसको कहते हैं शील धर्म, इसको कहते हैं सूची धर्म, सूची धर्म क्या होता है, मन की पवित्रता और शरीर की पवित्रता, शरीर से तो पवित्र हो जायेंगे, हम प्रतिदिन स्नान करेंगे, ये हमारे जितने भी अंग–प्रत्यंग है। ठाकुर जी ने हमें सेवा करने के लिए दिए हैं।

वृद्धों की यादें धूमिल कर देता है शोर

गुणकारी–हिंग

हींग का उपयोग विशेषतः दाल–साग को बघारने में होता है। इसीलिए इसे 'बघारनी' नाम दिया गया है। इस प्रकार हींग हमारी दैनिक उपयोग की वस्तु है। रुचि, आफरा, उदावर्त, पेट–रोग आदि में हींग उपयोगी है। उपरांत यह नारु जैसे अनेक रोगों में असरकारक औषधि के रूप में भी उपयोगी है। भारत में हींग का खूब उपयोग होता है। यह फेरुला–फोइटिडा नामक पौधे का चिकना रस है। ये पौधे दो से चार फुट ऊँचे होते हैं। ये पौधे ईरान, अफगानिरस्तान, तुर्किस्तान, बलूचिस्तान, काबुल और खुरासान के पहाड़ी इलाकों में होते हैं। वहाँ से हींग पंजाब तथा मुम्बई आती है :

हींग दो प्रकार की होती है– बाल्हाक और रामठ। यद्यपि बाजार में अनेक प्रकार की हींग देखने को मिलती है। हिमालय की ऊँची पहाड़ियों पर हींग की बोआई करने लायक है। बसंत ऋतु में हींग इकट्ठी की जाती है। इस ऋतु में वृक्ष की शाखाएँ बढ़ने लगती हैं, तब स्थानीय लोग वृक्ष के मूल के इर्द–गिर्द की जमीन को खोदकर मूल का भाग खुला कर देते हैं। फिर उन पर चीरे लगाकर तथा छेदकर उसका रस इकट्ठा किया जाता है और उसे चमड़े की थैलियों में भरा जाता है। यह रस सूखने पर हींग बनती है।

अच्छी उत्तम प्रकार की हींग में से तीव्र गंध आती है। गंध की तीव्रता के आधार पर ही हींग की कीमत आँकी जाती है। उत्तम–श्रेष्ठ हींग को 'हीरा हींग' कहते हैं। यह हींग चमकदार, तीव्र, सुगंधयुक्त और लालिमा लिये हुए पीले रंग की होती है। जलाने पर यह कपूर की तरह जलती है और इसमें से उत्तम सुगंधित धुआँ निकलता है। इसका स्वाद तीखा, कसैला और कडुआ लगता है। उष्णता में यह कस्तूरी से जरा भी कम नहीं है। शुद्ध हींग को पानी में घोलने पर पानी दूध जैसा सफेद हो जाता है। यदि हींग मिलावट वाली होगी तो पानी के नीचे जम जाएगी।

हींग की एक हल्की किस्म है काली हींग। इसमें स्वाद और सुगंध नाम मात्र को होती है तथा यह दुर्गंधयुक्त होती है। यह काले वृक्ष में से बनती है, अतः 'काली हींग' कहलाती है। यह हींग अपने कृमिनाशक गुण के कारण बाग–बगीचों में छिड़कने और जानवरों के लिए उपयोग में आती है। औषधि के लिए हीरा हींग का ही उपयोग करना चाहिए।

भारत में एवं अन्य देशों में हींग का उपयोग प्रत्येक घर में मसाले के रूप में दाल–साग, बड़ी–पापड़ आदि में स्वाद और सुगंध लाने के लिए होता है। इससे भोजन सुपाच्य , वायुनाशक तथा खाने में स्वादिष्ट बनता है। अचार बनाने में भी हींग का उपयोग होता है। अधिकतर लोग हींग का स्वाद पसंद करते हैं। आयुर्वेद में प्राचीन काल से हींग का उपयोग होता है। अनेक गोलियों तथा चूर्णों में इसे मुख्य औषधि माना गया है। अपच और वायु पर इसका प्रयोग निर्भयतापूर्वक किया जाता है। एलोपेथी में भी अर्क, वटी और चूर्ण के रूप में अनेक रोगों में इसका उपयोग होता है। औषधि के तौर पर या खाने के लिए उपयोग करने से पूर्व हींग को घी में सेंक– तलकर, शुद्ध कर दी जाती है। औषधि के रूप में तो कच्ची हींग का ही उपयोग करना चाहिए। शीघ्र लाभ प्राप्त करने के लिए हींग को थोड़े गर्म पानी में खरल करके पिलाया जाता है। हींग की मात्रा दो से आठ रत्ती की है। घी में सेकी हुई हींग की मात्रा छह से बारह रत्ती की है। हींग गर्म, पाचक, रुचि–उत्पादक, तीक्ष्ण एवं वायु, कफ, शूल, गुल्म, आफरा और कृमि को नष्ट करती है। यह पित्त को बढ़ाती है।

अपंग, अनाथ, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत्

नि:शक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा नि:शुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि ईश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावें-मान्यवर !

मोबाइल/होम एप्लायसेंस रिपेयरिंग/कम्प्यूटर/सिलाई/महेन्दी/ अगरबत्ती/हार्डवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000/-
3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 150000/-
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 225000/-

50 रोगियों की आजीवन भोजन /नाश्ता मित्ती

वर्ष में एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 22,000/-
वर्ष में एक दिन एक समय की आजीवन भोजन मित्ती सहयोग राशि	- 11,000/-
वर्ष में एक दिन की आजीवन नाश्ता मित्ती सहयोग राशि	- 5,000/-

बालगृह शिक्षा सहयोग योजना

एक बच्चे के एक माह की शिक्षा सहयोग राशि	- 600/-
एक बच्चे के एक वर्ष की शिक्षा सहयोग राशि	- 7200/-

आजीवन लालन–पालन योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे के आजीवन पालनहार 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेगा।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन मित्ती)

एक बालक का एक माह का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि - 2100/-	
एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता,भोजन सहयोग राशि- 2100 X12 =25,200/-	

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक खर्च

भोजन खर्च सहयोग राशि - 2100 X12 = 25,200/-	शिक्षा खर्च - 600 X 12 = 7200 /-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च - 2500/-	विविध खर्च राशि - 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि - 41800/-	

प्रति नि:शक्त शिविर सहयोग राशि - 1,51000/-

सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org

आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

सादर अनुरोध - आपश्री संस्थान की दान प्राप्ति रसीद बुक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-0294-6622222,9649499999

पढ़ेंगे - लिखेंगे होंगे कामयाब

इच्छा शक्ति कल्पवृक्ष के समान है जो आपको हर वो चीज दे सकती है जिसको आप कल्पना करते हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एन.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com